

ऐसा होने से रोकने के लिए, भारत के मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन शुरू किया, जो 1919-1924 तक चला। अल्लामा मशरिकी के लिए, जो आगे चलकर दक्षिण एशिया के सबसे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में से एक बन गए, खलीफा एक महत्वपूर्ण संस्था थी, लेकिन वह नख-दंत विहीन और अप्रासंगिक हो गई थी। मशरिकी ने इतिहास के इस पल का इस्तेमाल अंग्रेजों की

कमजोरी उजागर करने, मुसलमानों को एक नई दिशा में इंगित करने और ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता लाने में मदद के लिए करने का फैसला किया।

उस समय, जब मित्र देशों की सेनाएं ऑटोमन साम्राज्य को हराने के लिए लड़ रही थीं, मशरिकी भारत के वायसरॉय (लॉर्ड चेम्सफोर्ड) के सचिवालय में ब्रिटिश भारत सरकार के लिए शिक्षा के अवर सचिव के रूप में काम कर रहे थे। 1918 में जब ओटोमन्स की हार हुई, तो दुनिया भर के मुसलमान बेहद व्यथित थे।

भारत में, ओटोमन पतन ने ब्रिटिश शासकों के खिलाफ बहुत आक्रोश पैदा किया। चूंकि वह ब्रिटिश भारत सरकार के एक उच्च अधिकारी थे, इसलिए अंग्रेजों को मशरिकी से अपेक्षा थी कि वे अंग्रेजों के खिलाफ सार्वजनिक आक्रोश को दूर करने में मदद करने के लिए ओटोमन्स के खिलाफ बोलेंगे। लेकिन मशरिकी ने ओटोमन्स की निंदा करने से इनकार कर दिया और उनके असहयोगी रवैये (इस पर और शिक्षा नीति के अन्य मामलों पर) ने उनके और अंग्रेजों के बीच रिश्ते तनावपूर्ण हो गए। नतीजतन, उन्हें 15 अक्टूबर, 1919 को उनके अवर सचिव पद से हटाकर पेशावर में सरकारी हाई स्कूल का प्रधानाध्यापक बना दिया गया। दो दिन बाद, 21 अक्टूबर, 1919 को मशरिकी ने स्कूल जॉइन कर लिया।

लगभग उसी समय, खलीफा की संस्था को संरक्षित करने के प्रयास में खिलाफत आंदोलन शुरू किया गया था। जब उक्त आंदोलन अपने चरम पर था, इस्लामी विद्वानों ने भारत को दार-उल-हर्ब (युद्ध का घर) घोषित करते हुए एक फतवा जारी किया और लोगों से दार-उल-अमन (शांति का घर) में जाने के लिए कहा। फतवे के परिणामस्वरूप, भारत से मुख्य रूप से अफगानिस्तान में बड़े पैमाने पर लोगों का पलायन हुआ। इसे हिजरत आंदोलन के नाम से जाना गया। बड़ी संख्या में लोगों ने अपने घर, जमीन, पशुधन और अन्य सामान सस्ते में बेच दिए और देश छोड़ दिया।

अंग्रेजों को डर था कि देश से बढ़ते हुए पलायन से उनके खिलाफ लोगों की नाराजगी और गहरी हो जाएगी और अंततः भारत में उनके शासन को उखाड़ फेंका जा सकता है। अंग्रेज भी दुनिया भर में अपनी प्रतिष्ठा को होने वाले नुकसान के बारे में चिंतित थे।

पेशावर (जहाँ मशरिकी प्रधानाध्यापक के रूप में काम कर रहे थे) प्रवास का केंद्र बन गया। मुस्लिम समुदाय पर मशरिकी के प्रभाव को जानने के बाद, सर अल्फ्रेड हैमिल्टन ग्रांट (एनडब्ल्यूएफपी के मुख्य आयुक्त) ने अपने वरिष्ठों के निर्देशों का पालन करते हुए मशरिकी को

एक बैठक के लिए आमंत्रित किया. बैठक में पहुंचने पर मशरिकी का रेड कार्पेट पर स्वागत किया गया.

चर्चा के दौरान, ग्रांट ने खिलाफत आंदोलन और भारत से मुसलमानों के पलायन को रोकने के प्रयासों के संबंध में ब्रिटिश नीति के सार्वजनिक समर्थन के बदले में 1920 में मशरिकी को अफगानिस्तान में राजदूत और 1921 में नाइटहुड (सर की उपाधि) की पेशकश की.

लेकिन मशरिकी में "भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्लिम लोगों के लिए भावना" (डॉन 1963 अगस्त 28) मजबूत थी और उन्हें उपाधियों और पदों से नहीं खरीदा जा सकता था. मशरिकी ने ग्रांट द्वारा प्रस्तुत दोनों प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया. उसने शासकों को यह भी सूचित किया कि यदि वे उस पर दबाव डालते रहे तो वह सरकारी सेवा से इस्तीफा दे देंगे. मशरिकी के सैद्धांतिक रुख से शासक हैरान थे, क्योंकि अधिकांश भारतीय मुसलमान या गैर-मुसलमान इस तरह के प्रतिष्ठित और आकर्षक प्रस्तावों को स्वीकार करने के अवसर पर खुशी से कूद गए होते.

इसके बाद मशरिकी और अंग्रेजों के बीच संबंध बद से बदतर होते चले गए.

इस बीच, खिलाफत आंदोलन के समर्थकों ने प्रस्ताव पारित करना और विरोध मार्च आयोजित करना जारी रखा. आंदोलन बुरी तरह से अव्यवस्थित था और वांछित परिणाम लाने के लिए एक ठोस एजेंडे की कमी थी और मुस्लिम नेतृत्व इसकी शुरुआत में विभाजित रहा. मामला और बदतर हो रहा था क्योंकि अफगानिस्तान के पास इन प्रवासियों के बोझ को वहन करने के लिए बुनियादी ढांचा और वित्तीय संसाधन नहीं थे. नतीजतन, भोजन, चिकित्सा सुविधाएं, आवास और अन्य व्यवस्थाएं मौजूद नहीं थीं.

गरीब प्रवासी बीमार थे, भूख से मर रहे थे और अत्यधिक वित्तीय कठिनाई का सामना कर रहे थे; कई लोगों की चिकित्सा सहायता के अभाव में मृत्यु हो गई.

मशरिकी ने महसूस किया कि आंदोलन बहुत देर से आया. वास्तव में, आंदोलन के कुछ मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समर्थक, जिनमें गांधी जी ने पहले विश्वयुद्ध में सहयोगी बलों के लिए सक्रिय रूप से लोगों को सेना में भर्ती करने में मदद की थी, जिसके कारण तुर्क साम्राज्य की हार हुई थी और खलीफा संस्था के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया था.

अब वही समर्थक खलीफा की संस्था की सुरक्षा की मांग कर रहे थे. मशरिकी ने देखा कि आंदोलन खराब तरीके से संगठित था और इससे प्रवासियों के लिए और दुख होगा. उन्होंने यह भी माना कि प्रस्ताव पारित करने, भाषण देने और विरोध रैलियों का आयोजन करने से दुनिया के सबसे शक्तिशाली शासन - ब्रिटिश साम्राज्य को खत्म करने के लिए कुछ भी सार्थक नहीं होगा.

मशरिकी का मानना था कि आंदोलन पूरी तरह से विफल हो गया था. खिलाफत आंदोलन में शामिल होने और हिजरत आंदोलन का समर्थन करने के लिए मौलाना मोहम्मद अली जौहर और मौलाना अबुल कलाम आजाद सहित प्रमुख खिलाफत नेताओं द्वारा मशरिकी से संपर्क किया गया था. समग्र परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, मशरिकी के लिए आंदोलन का समर्थन करना उचित नहीं था.

मुगल साम्राज्य और अब तुर्क साम्राज्य के नुकसान और मुसलमानों की निरंतर और तेजी से गिरावट (अपनी खुद की कमियों के कारण) को स्वीकार करते हुए, मशरिकी ने मुसलमानों का मार्गदर्शन करके स्थिति को पूर्ववत करने का फैसला किया. उन्होंने अपनी पुस्तक तज़क़िरा लिखना शुरू किया, जिसमें उन्होंने राष्ट्रों के उत्थान और पतन के कारणों की व्याख्या की और विज्ञान के प्रकाश में पवित्र कुरान की व्याख्या की.

मशरिकी ने शांति और विज्ञान के महत्व पर भी चर्चा की (एक ऐसा क्षेत्र जहां मुसलमान शायद ही योगदान दे रहे थे). पुस्तक ने विश्वव्यापी प्रशंसा अर्जित की और पूर्वी और पश्चिमी विद्वानों द्वारा साहित्य में नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया.

मशरिकी की उत्कृष्ट साख के बारे में जानने के बाद, प्रसिद्ध अल-अजहर विश्वविद्यालय (मिस्र) के शेख-उल-इस्लाम और शेख मुहम्मद अबू अल-फदल अल-गिजावी ने मशरिकी को 1926 के मई में काहिरा में अंतर्राष्ट्रीय खिलाफत सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया. सम्मेलन मुख्य रूप से एक नया खलीफा नियुक्त करने के लिए बुलाया गया था (जिसे परदे के पीछे से अंग्रेजों द्वारा चुना जाना था).

मशरिकी ने इसे एक शक्तिशाली खलीफा के मानदंड का प्रस्ताव करने, एक अंतर्राष्ट्रीय इस्लामी संगठन (या मुस्लिम राष्ट्रों के लीग) की स्थापना करने और मुस्लिम भव्यता की वापसी के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत करने का अवसर माना. उन्होंने सम्मेलन को प्रतिनिधियों से मिलने और

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने के लिए जमीन तैयार करने का अवसर भी माना. मशरिकी ने सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया.

सम्मेलन के लिए मिस्र में मशरिकी के आगमन के बाद, मिस्र के राजा फौद के प्रतिनिधि, अल-अजहर विश्वविद्यालय के कई विद्वान, त्रिपोली के पूर्व अमीर इमाम शेख अल-सानुसी और उनके बेटे (अर्थात् शेख मुहम्मद इदरीस सानुसी, जो बाद में राजा बने. लीबिया और कर्नल मुअम्मर गद्दाफी द्वारा अपदस्थ) मशरिकी से मिलने उनके होटल आए थे.

13मई, 1926को, सम्मेलन के उद्घाटन के दिन, मशरिकी ने एक नए खलीफा की नियुक्ति के खिलाफ बहस करते हुए एक ऐतिहासिक भाषण में उपस्थित लोगों को संबोधित किया. धाराप्रवाह अरबी में बोलते हुए, मशरिकी ने कहा, "अगर किसी चीज़ में महत्वहीन गुणों की तुलना में अधिक लाभ/गुण हैं, तो यह संभावना नहीं है कि कोई इसे [खिलाफत] फेंक देगा." मशरिकी के लिए, एक ऐसी संस्था को संभालना जो नखदंत विहीन, सतही और केवल नाम में मौजूद है, अर्थहीन थी. उन्होंने कठपुतली खलीफा को नियुक्त करने के विचार को भी खारिज कर दिया, क्योंकि इससे वांछित परिणाम कभी नहीं आएंगे. उन्हें लगा कि यह कदम मुसलमानों के लिए नुकसानदेह होगा. उन्होंने कहा, "... खिलाफत केवल उस व्यक्ति के लिए उपयुक्त है जिसके आदेश का पालन किया जाएगा. एक मात्र मूर्तिपूजक खलीफा बिल्कुल अर्थहीन है..." (खिताब-ए-मिस्र).

अपने संबोधन के दौरान, मशरिकी ने उन व्यापक कारणों की रूपरेखा तैयार की, जिनके कारण उन्हें लगा कि मुसलमान अपनी वर्तमान परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं और इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की. उदाहरण के लिए, मशरिकी ने महसूस किया कि मुसलमानों ने भविष्य (मौलवी द्वारा प्रचारित) पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया, जबकि हाथ में जीवन की अनदेखी की.

मशरिकी के अनुसार, इस दृष्टिकोण ने मुसलमानों को दुनिया की खोज या अन्वेषण में योगदान देने से बचने के लिए प्रेरित किया था क्योंकि बहुत कुछ बाद के जीवन पर केंद्रित था. मशरिकी का कहना था कि यहां और बाद का जीवन आपस में जुड़ा हुआ है और यह कि दुनिया को बिना किसी उद्देश्य के नहीं बनाया गया है. उन्होंने कहा कि "[अनुवाद] मानवता के निर्माण का मुख्य उद्देश्य ब्रह्मांड की खोज है" और "दुनिया की सर्वोच्चता रखने के लिए, निरंतर संघर्ष और कार्रवाई की आवश्यकता है."

अपने भाषण में, मशरिकी ने मुस्लिम पुनर्जागरण लाने के लिए एक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की. सैयद शब्बीर हुसैन ने अपनी पुस्तक अल-मशरिकी: द डिस्ओउन्ड जीनियस में मशरिकी के शब्दों को संक्षेप में प्रस्तुत किया:

"उनका [मशरिकी] का पहला प्रस्ताव हर मुस्लिम देश में धीरे-धीरे एक प्रणाली विकसित करना था जिसके तहत प्रत्येक मुहल्ले [शहर, इलाके, या पड़ोस] में एक धार्मिक नेता [दीनी मुदीर] को गांव और शहर के नेताओं [दीनी अमिल] के माध्यम से जोड़ा जाएगा. प्रत्येक देश के लिए एक धार्मिक अमीर [दीनी अमीर] के साथ. मोटामार [सम्मेलन], उन्होंने कहा, ऐसे अमीर को चुनने या हटाने की जिम्मेदारी होनी चाहिए जो लोगों के धार्मिक और सामूहिक मामलों की देखभाल करेगा.

दूसरे प्रस्ताव के माध्यम से उन्होंने एक व्यक्तिगत शासक में इस स्थिति को निहित करने के बजाय मोटामार को खिलाफत के स्थायी संरक्षक के रूप में बनाने की मांग की. उन्होंने कहा कि मोटामार को मुस्लिम दुनिया के हर महत्वपूर्ण शहर में वार्षिक सत्र आयोजित करने चाहिए. उनका तीसरा प्रस्ताव मोटामार द्वारा संचालित सेंट्रल बैत-उल-माल [सेंट्रल ट्रेजरी] की स्थापना करना था. इसमें योगदान प्रत्येक मुस्लिम शासक और व्यक्तिगत मुसलमानों से आना चाहिए ..."

उनका चौथा "प्रस्ताव मोटामार के प्रत्येक प्रतिनिधि द्वारा एक घोषणा थी कि वह मुसलमानों के किसी भी संप्रदाय से संबंधित नहीं थे, लेकिन समान सम्मान दिखाने के लिए एक शुद्ध और सरल मुस्लिम थे. सभी उलेमाओं, सूफ़िया, मशैख और इमामों को, लेकिन उन्हें मूर्तियाँ बनाने के लिए नहीं."

मशरिकी ने सांप्रदायिकता को मुसलमानों के लिए एक घातक ज़हर माना: "हमारे राष्ट्रीय पतन का कारण सांप्रदायिकता है, और अंतिम और एकमात्र उपाय चुप रहना है, न कि टकराव और तर्क में शामिल होना."

उनका मानना था कि एक उचित बुनियादी ढांचे के बिना जो दुनिया के मुसलमानों को खिलाफत की संस्था से जोड़ता है, खलीफा अप्रभावी होगा. मशरिकी ने यह भी सुझाव दिया कि वर्तमान मोटामार को स्थायी घोषित किया जाना चाहिए और इसका औपचारिक प्रधान कार्यालय, शायखुल-इस्लाम के नेतृत्व में, जामिया अल-अजहर में स्थित होना चाहिए.

अपने प्रस्ताव पेश करने के बाद मशरिकी ने नए खलीफा की नियुक्ति के विरोध में अपने कारण बताए. अंत में उन्होंने कहा, "सज्जनों! मैं आपको अपना अंतिम प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं और आपको एक स्वर में [सभी एक साथ/संयुक्त रूप से] यह स्वीकार करने के लिए आमंत्रित करता हूं कि खिलाफत के चुनाव का विषय कुछ और समय के लिए छोड़ दिया गया है."

मशरिकी ने अपने साहसिक और विचारशील भाषण से प्रतिनिधियों को चकित कर दिया; बहुतों ने व्यक्त किया कि उन्होंने ऐसा वाक्पटु और शक्तिशाली भाषण पहले कभी नहीं सुना था. मशरिकी के भाषण के परिणामस्वरूप, प्रतिनिधियों ने उपरोक्त तीन प्रस्तावों को सर्वसम्मति से और चौथे को बहुमत से मंजूरी दी. इसे मशरिकी के करियर की सबसे महत्वपूर्ण जीत में से एक माना जाता था, क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की वैश्विक शक्ति की उंचाई पर, खलीफा के रूप में ब्रिटिश प्रायोजित राजा फौद की नियुक्ति को सफलतापूर्वक विफल कर दिया था.

मशरिकी (जिनका जन्म इनायतुल्ला खान के रूप में हुआ था) की उत्कृष्ट शैक्षणिक साख और दूरदृष्टि के आधार पर, अल-अजहर विश्वविद्यालय के विद्वानों ने उन्हें अल्लामा मशरिकी या पूर्व के संत की उपाधि दी. बाद में मशरिकी का भाषण न केवल मिस्र में प्रकाशित हुआ, बल्कि कई देशों में हजारों प्रतियां वितरित की गईं. ब्रिटिश भारत में, अरबी भाषण का उर्दू में अनुवाद किया गया और अमृतसर से प्रकाशित किया गया. भाषण ने ब्रिटिश साम्राज्य के दमनकारी शासन के खिलाफ कई क्षेत्रों में जागृति में योगदान दिया, और इसलिए, साम्राज्य का पतन शुरू हुआ.

मिस्र (और यूरोप) से लौटने के बाद, 1930में, मशरिकी ने उस कार्यक्रम को लागू करने के लिए अपना खाकसर आंदोलन शुरू किया, जिसे उन्होंने मिस्र में अपने भाषण में शामिल किया था. मशरिकी ने लोगों को प्रबुद्ध करने के लिए अतिरिक्त कार्यों के साथ अपनी पिछली पुस्तक, तज़किराह का अनुसरण किया. 1931में, उन्होंने 15नवंबर, 1935को इशरत और बाद में काल-ए-फैसल प्रकाशित किया. पहली पुस्तक "मुसलमानों को फिर से शक्तिशाली बनाने का एकमात्र तरीका और व्यावहारिक समाधान प्रदान करती है." दूसरी किताब "राष्ट्रों के पतन और इसके इलाज - खाकसर आंदोलन कार्यक्रम की एक पूर्ण व्याख्या" पर चर्चा करता है. उनकी विचारधारा इतनी सफल थी कि उनके खाकसर आंदोलन में 50 लाख से अधिक सदस्य कई लाखों अतिरिक्त अनुयायियों और समर्थकों के साथ शामिल हुए. जनता तक पहुँचने के लिए आंदोलन ने कई देशों में शाखाएँ भी स्थापित कीं.

खाकसर आंदोलन इतना शक्तिशाली हो गया कि ब्रिटिश साम्राज्य अपनी पूरी ताकत के बावजूद इस आंदोलन को कुचल नहीं सका. ब्रिटिश शासक अपने शासन को उलटने की खाकसर आंदोलन की योजना से इतने भयभीत हो गए कि उनके पास 1947में भारत में अपना शासन छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था (पाकिस्तान और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के आसपास स्थापित इतिहास का अधिकांश भाग गढ़ा गया है और इसे फिर से लिखने की जरूरत है).

जहां तक खिलाफत आंदोलन का सवाल है, इसने न तो तुर्कों को कोई फायदा मिला और न ही भारत में ब्रिटिश शासन में सेंध लगाई. जब 1924में खिलाफत आंदोलन का पतन हुआ (उसी वर्ष खलीफा की संस्था को तुर्कों द्वारा समाप्त कर दिया गया था), मशरिकी की भविष्यवाणी सही साबित हुई थी. जबकि मशरिकी खिलाफत आंदोलन के प्रति सहानुभूति रखते थे, उन्होंने महसूस किया कि एक अप्रभावी या ब्रिटिश प्रायोजित खलीफा होना व्यर्थ था. और इसलिए, जबकि खिलाफत आंदोलन खलीफात की संस्था की रक्षा के लिए एक गुमराह प्रयास के रूप में शुरू हुआ, मशरिकी औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने के लिए अपने व्यापक एजेंडे को आगे बढ़ाने के अवसर का उपयोग करने में सक्षम था.

हालांकि, मशरिकी का मानना था कि खाकसार आंदोलन (निजी सेना) को स्वतंत्रता लाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली होने की आवश्यकता थी, वह आम तौर पर एक शांतिप्रिय व्यक्ति थे. अपने पूरे जीवन में, उन्होंने धर्म, वर्ग, रंग या पंथ की परवाह किए बिना भाईचारे, समानता, न्याय और सभी गरीबों के उत्थान का उपदेश दिया. दुनिया आज भी इन सबक से सीख सकती है.

(नसीम युसूफ अल्लामा मशरिकी के पोते और जीवनी लेखक हैं अमेरिका में एक शोधकर्ता हैं. उन्होंने अकादमिक सम्मेलनों में पत्र प्रस्तुत किए हैं, कई किताबें प्रकाशित की हैं, अल्लामा मशरिकी के ऐतिहासिक समाचार पत्र ("अल-इस्लाह" साप्ताहिक पत्रिका) का एक डिजिटल संस्करण संकलित किया है, और प्रतिष्ठित और सहकर्मि-समीक्षित विश्वकोशों और अकादमिक पत्रिकाओं में लेखों का योगदान दिया है. उनकी रचनाएँ पूर्व और पश्चिम दोनों के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई हैं.)